PAGE No
DATE : / 201

अपना जगनानी परिवार जिसका गोत्र मंगल है, राजस्थान राज्य के झुन्झुनू जिले के मुख्यालय झुन्झुनू में जगनानीयों के मुहल्ले के रहने वाले हैं। आज भी झुन्झुनू में अपना मकान एवं दुकान है जो पटीदारों के जिम्मे है। अपने वहाँ से काफी पहले लगभग 1924 में बिहार प्रान्त आ गये थे, जिसका वर्णन बड़े भईया ने अपने पत्र में किया है।

अपने जगनानी परिवार के कुल देवता "बाबा श्याम" खाटू वाले हैं। अपके सभी व्यवसायिक कार्य उनके नाम से ही करने का प्रयास किया जाता है यथा श्याम साड़ी भण्डार, श्याम वस्त्रालय, श्याम वायल डि०, श्याम मेडिको, खाटू श्याम डि०, श्री श्याम सेल्स। इन्हीं के साथ परिवार ने अपने बच्चों के नाम भी यथा संभव बाबा श्याम के नाम सम्बन्धीत रखने का प्रयास किया है जैसे श्याम सुन्दर, श्याम लाल, श्याम शरण, राधे श्याम। अपने जात-जडूले सभी कार्य खाटू बाबा श्यामजी के मंदिर परिसर में ही होते हैं। खाटू में आज भी अपने परिवार के दो मकान हैं जो कि एक पुराने कुण्ड एवं एक नये कुण्ड के नजदीक है। जहाँ प्रत्येक वर्ष बड़े भइया नन्द किशोरजी जाकर दर्शन प्रयास करते हैं एवं भण्डारे का आयोजन करते हैं।

इसी संदर्भ में कुछ चर्चा जो नहीं हो सकी उसे भी बताना आवश्यक है। श्री बिहारीलाल जी की दो शादियाँ हुई थी। पहली शादी नानपारा हुई थी और पत्नी का नाम चमेली देवी था। उनकी मृत्यु के पश्चात दूसरी शादी मुजफ्फरपुर के जलान परिवार में हुआ जिनका नाम पार्वती देवी था। विवाह के पश्चात 40 वर्ष के उम्र तक कोई सन्तान नहीं होने पर छोटे भाई लिलाधर जी के द्वितीय पुत्र को दादी ने गोद ले लिया था। उस समय उस बच्चे का नाम कृष्ण कुमार था परन्तु तबियत खराब रहने पर उस लड़के का नाम बाबा श्याम के साथ जोड़कर ~~xxxx xxxx~~ श्याम सुन्दर रखा गया और तब वह लड़का स्वस्थ्य हुआ।

इस संदर्भ में यह बताना चाहता हूँ कि महाराजगंज का मकान 1940 से बनना शुरु होकर 1945 के 26 जनवरी को बाबा श्यामजी के कीर्तन के पश्चात गृह प्रवेश हुआ था। इस मकान के नक्से में अंग्रेजों का काफी योगदान रहा है।

जो वर्माशेल के देख-रेख के लिए महाराजगंज आया करते थे। उस वक्त बिहारी लालजी को DBBL गन का लाइसेन्स बाबू बिहारी लाल जी के सम्मान-जनक नाम ले लिया गया था।

इसी संदर्भ में यह भी उल्लेखनिय है कि लिलाधरजी ने अंग्रेजों के खिलाफ 1947 के स्वतंत्रता आन्दोलन में सक्रिय भाग लिया था एवं स्थानिय थाना स्टेशन आदि को जलाने में सक्रिय रहे थे, जिसके कारण वर्षों उन्हें महाराजगंज छोड़कर बाहर रहना पड़ा एवं काफी दिक्कत उठानी पड़ी थी।

स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात जब सरकार ने स्वतंत्रता सेनानियों को सम्मानित किया तो लिला मारवाड़ी के नाम पर इन्हें ताम्र पत्र सरकार की ओर से दिया गया एवं राजकीये पेंसन भी मिला। उनके मृत्यु के पश्चात माता गिनीया देवी को भी जीवन प्रयन्त पेंसन मिलता रहा।